ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 23 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 01 मई, 2023 से रविवार 07 मई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh |

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

पर्यावरण शुद्धि एवं विश्व कल्याण के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर

अंर्तराष्ट्रीय यज्ञ दिवसः 3 मई 2023 को प्रातःकाल भारत के कोने कोने में और विदेशों में लाखों आर्य परिवारों में यज्ञों के कार्यक्रम संपन्न

हर वर्ग, आयु के स्त्री पुरुषों सहित बच्चों ने दी यज्ञ में उत्साह पूर्वक आहुतियां

आर्य समाज एक महान परोपकारी विश्व स्तरीय संगठन है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज की नियमावली में जहां वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का निर्देश दिया है, वही पंचमहायज्ञ विधि के अनुसार पर्यावरण शुद्धि एवं विश्व कल्याण के लिए नियमित अग्निहोत्र करने का भी विधान बताया है। अतः 3 मई 2020 को जब भारत सहित संपूर्ण विश्व में कोरोना जैसी महामारी लोगों को असमय मृत्यु के आगोश में सुला रही थी, सभी मठ, मंदिर और सार्वजनिक स्थल बंद पड़े थे, सभी पूजा, पाठ, संकीर्तन, सत्संग बैन थे, लगभग सभी देशों में लाक डाउन से लोग घरों में कैद होने पर मजबूर थे, तब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर संपूर्ण आर्य जगत ने अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर एक साथ एक समय 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की भावना से यज्ञ का सुंदर आयोजन किया था। तब से लेकर हर वर्ष 3 मई को आर्य समाज का विश्व व्यापी संगठन देश और विदेशों में एक साथ लाखों की संख्या में यज्ञों का आयोजन उत्साह पूर्वक करता आया है।

इस क्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर 3 मई 2023 को प्रातः काल 6:00 से 9:00 के बीच किसी भी समय यज्ञ करने के निर्देश को स्वीकार करते हुए भारत के कोने कोने में और विदेशों में लाखों की संख्या में आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य परिवारों और आर्य प्रतिष्ठानों सहित सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं में यज्ञों का आयोजन किया। इस अवसर पर आर्य समाज के सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों ने प्रमुखता से यज्ञ किए। सबसे बड़ी बात यह रही कि गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आर्य अनाथालय और अन्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चों ने भी यज्ञ किए। जिनमें पूरे देश के समाचारों को अगर देखा जाए तो लेह लद्दाख से लेकर काश्मीर और कन्या कुमारी तक तथा विदेशों में रहने वाले आर्य परिवारों ने पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ पारिवारिक और सामूहिक स्तर पर यज्ञ किए। यज्ञ संसार का श्रेष्ठ कर्म है, इस भावना को साकार करते हुए विश्व यज्ञ दिवस पर आर्य कन्या विद्यालय अलवर की विभिन्न संस्थाओं में यज्ञ के आयोजन सफलता पूर्वक किए गए। इससे भी ज्यादा प्रसन्नता की बात यह है कि जिन बच्चों को आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल के माध्यम से शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक स्तर सुदृढ़ बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है और साथ में यज्ञादि कर्म की प्रेरणा भी प्रदान की जाती है, ऐसे सैंकड़ों बच्चों ने स्कूल जाने से पूर्व अधिकांश रूप से अकेले यज्ञ किया। इसके लिए आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल के सभी शिक्षकों और आर्य वीरों को बहुत बहुत बधाई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ की पूरी टीम ने दिल्ली और एन.सी.आर. में विभिन्न स्थानों पर सेवा बस्तियों में यज्ञ किए और निरंतर यज्ञ करने का संदेश भी दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस 3 मई 2023 को प्रातःकाल स्कूल जाने से पूर्व यज्ञ करते हुए वर्चसी आर्या, दिल्ली, प्रज्ञानकृष्ण आर्य, प्रद्युम्न आर्य, अर्चिषा आर्या, वाराणसी, दीपक आर्य, अमरदीप आर्य, हर्ष आर्य, मोहित आर्य, दीपांशु आर्य, दक्षता आर्या, शुभम आर्य, अभिषेक आर्य आदि दिल्ली के विभिन्न आर्य परिवारों के बच्चे यज्ञ में आहुती देते हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस पर आर्य कन्या विद्यालय अलवर की विभिन्न संस्थाओं में सामूहिक यज्ञ करती हुइ छात्राएं एवं लेह लद्दाख में यज्ञ करते हुए आर्यजन।

वेदवाणी-संस्कृत

परम जातवेदा मुझे श्रद्धा और मेधा देवे

वेद-स्वाध्याय

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे ।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु ॥
-अथर्व० 19 । 64 । 1
ऋषिः-ब्रह्मा॥ देवता-अग्निः॥ छन्दः-अनुष्टुप् ॥

शब्दार्थ- अग्ने=हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! **बृहते**=बहुत बड़े, परम **जातवेदसे**=जातमात्र के जानने वाले, ज्ञानयुक्त आपके लिए मैं **समिधम्**=समिधा को, प्रदीपनीय वस्तु को **आहार्षम्**=आहरण करता हूँ, लाता हूँ। **सः**=वह **जातवेदाः**=ज्ञानयुक्त अग्नि **मे**=मुझे **श्रद्धां च**=श्रद्धा को भी और **मेधां च**=मेधा को भी **प्रयच्छतु**=प्रदान करे।

विनय- जब समिधा अग्नि में डाली जाती है तो वह जल उठती है, अग्निरूप हो जाती है, समिधा में छिपी अग्नि उद्बुद्ध हो जाती है, प्रदीप्त अवस्था में आ जाती है। इसीलिए वैदिक काल के जिज्ञासु लोग समित्पाणि होकर (समिधा हाथ में लेकर) गुरु के पास आया करते थे, अपने को समिधा बनाकर गुरु के लिए अर्पित कर देते थे, जिससे कि वे अपने गुरु की अग्नि से प्रदीप्त हो जावें। उस वैदिक विधि के अनुसार मैं भी अपने आचार्य के चरणों में उपस्थित हुआ हूँ और उनकी अग्नि द्वारा उन जैसा प्रदीप्त होना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि प्रदीप्त हो जाना बड़ा कठिन है। प्रदीप्त होने से पहले अपने को जला देना होता है और यह अपने को जला देना तभी किया जा सकता है जब मुझमें पूर्ण श्रद्धा हो कि इस जलने द्वारा मैं अवश्य प्रदीप्त व ज्ञानमय हो जाऊँगा। इसलिए पहले तो मुझमें श्रद्धा की आवश्यकता है। इसी प्रकार गीली होने आदि किसी दोष के कारण यदि समिधा अग्नि को धारण न करे, तो भी वह प्रदीप्त नहीं हो सकती। इसलिए मुझमें ज्ञान के धारण करने वाली बुद्धि, मेधा की भी आवश्यकता है। श्रद्धा और मेधा के बिना मैं कभी ज्ञान से दीप्त नहीं हो सकता, पर इस श्रद्धा और मेधा को मैं और कहाँ से लाऊँ? मैं तो इन 'जातवेदाः' अग्नि से, अपने आचार्यदेव से ही प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे श्रद्धा और मेधा का दान प्रदान करें। वे जातवेदा हैं, उन्हें ज्ञान हो चुका है, वे ज्ञान की जलती हुई अग्नि हैं, अतः वे 'जातवेदा' यदि चाहें तो मुझे श्रद्धा और मेधा भी दे सकते हैं।

अन्त में मैं प्रातः-सायं भौतिक अग्नि के लिए अपनी जो काष्ठ की समिधा लाता हूँ, शिष्यरूप में आचार्याग्नि के लिए अपने शरीर-मन-आत्मा के प्रदीपनार्थ जो तीन समिधाएँ प्रतिदिन लाता हूँ, राष्ट्रसेवक या धर्मसेवक बनकर राष्ट्राग्नि या धर्माग्नि आदि के लिए जो तदुपयोगी समिधाएँ लाता हूँ, ये सब की सब समिधाएँ अन्त में उस 'बृहत् जातवेदाः' के लिए, उस सब-कुछ जानने वाले महान् अग्नि के लिए लाता हूँ जो सब आचार्यों का आचार्य है, सब अग्नियों का अग्नि है, परम-परम अग्नि है और अन्त में उसी 'बृहत् जातवेदाः' से श्रद्धा और मेधा की याचना करता हूँ जोकि परम श्रद्धामय है और मेधा का भण्डार है।

-ःसाभारः- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

विकास के चक्कर में फंसकर विनाश की राह पर बढ़ती पंजाब की खेती

गऊ आधारित प्राकृतिक खेती को अपनाएं देश और पंजाब के किसान, आर्य समाज का है यह आह्वान

"महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के शुभारम्भ अवसर पर 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गांधी इन्डोर स्टेडियम के प्रागंण में आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने संदेश में कहा था कि हम पर्यावरण को जी-20 के ऐजेण्डे के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। इसमें गऊ आधारित प्राकृतिक खेती जैसे देश के महत्वपूर्ण अभियानों में आर्य समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आप हमारे प्राचीन दर्शन के साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्यों में और कर्त्तव्यों से जन-जन को जोड़ने की जिम्मेदारी आसानी से उठा सकते हैं। प्राकृतिक खेती से जुड़ा व्यापक अभियान हमें गांव-गांव पहुंचाना है। प्राकृतिक खेती, गऊ आधारित खेती हमें फिर से गांव-गांव में लेकर जाना है। मैं चाहूंगा कि आर्य समाज के यज्ञों में एक आहुति इसके लिए भी डाली जाए। अतः आर्य समाज देश के सभी किसानों से निवेदन करता है कि प्राकृतिक खेती अपनाएं स्वयं स्वस्थ रहें और देश को स्वस्थ बनाएं।"

पुण्यमय भारत देश में पंजाब राज्य का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। एक तरफ यहां की उर्वरा भूमि, सुंदर जलवायु तो दूसरी तरफ इसे वीर भूमि होने का भी गौरव प्राप्त है। पंजाब का प्राचीन शुद्ध, देशी खान-पान, रहन-सहन, राष्ट्रभक्ति, ईश्वरभक्ति, हंसी-खुशी का व्यवहार और देश, धर्म के प्रति बलिदान की भावना विश्व में प्रसिद्ध है। लेकिन बहते समय के प्रवाह में सब कुछ परिवर्तित होता गया। आज विकास के नाम पर पंजाब विनाश की राह पर लगातार आगे बढ़ रहा है। जिस खेती-किसानी को स्वयं गुरुनानक देव जी ने अपने हाथों से किया और गुरुवाणी में बीजारोपण को शुभकर्म की संज्ञा प्रदान की, इसके पीछे उनकी परोपकार की भावना और कामना थी। उनका संदेश यही था कि खेती करो, बांटकर खाओ और ईश्वर का नाम जपो, ऐसी दिव्य शिक्षा की प्रेरणाओं का इतिहास आज बीते जमाने की बात होकर रह गया। आज के झूठे विकास की रफ्तार की कीमत किसानों को चुकानी पड रही है। यूं तो पिछले पांच दशकों से पंजाब में आर्थिक स्थिति अच्छी रही है, किंतु पैदावारी की बढ़ोतरी के चक्कर में सच्ची हरियाली, खुशहाली बदहाली में बदलती जा रही है, पंजाब की पुरानी किसानी की आदर्श परंपरा आज दम तोडती जा रही है। पैदावारी को बढ़ाने के लिए खेतों में यूरिया, कीटनाशक, कैमिकल दवाईयां इस कदर डाली जा रही हैं कि धरती से उत्पन्न होने वाले सारे खाद्य पदार्थों को विषैला कर दिया है। इसके भयंकर परिणाम पर लुधियाना पंजाब के कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों का कहना है कि आज पंजाब राज्य के 40 प्रतिशत छोटे किसान या तो समाप्त हो चुके हैं अथवा अपने ही बिके हुए खेतों में मजदूरी करने को मजबूर हैं।

पंजाब में नए बीज, नई फसलें, अजीबो-गरीब खाद, कीड़े मार दवाएं, भयंकर, किस्म का मशीनीकरण और आंखों में धूल झोंकने वाले प्रचार ने किसानों का भविष्य अंधेरी गुफा में झोंक दिया है। खेतों में रसायनों के प्रयोग और अत्यधिक भूमिगत जल के दोहन के कारण भयंकर बीमारियां फैल रही हैं। ये रोग पटियाला और अमृतसर की ओर ज्यादा फैल रहे हैं। हाल ही में विकलांग बच्चों के जन्म की संख्या बढ़ने लगी है। मालवा क्षेत्र के 149 बीमार बच्चों में से 80 प्रतिशत के बालों में यूरेनियम की अत्यधिक मात्रा पाई गई है। कई लोग इसे अफगानिस्तान में अमेरिका द्वारा यूरेनियम के बमों का प्रभाव बताते हैं। एक अधययन के अनुसार पंजाब का 80 प्रतिशत पानी मनुष्यों के पीने लायक नहीं रहा है। 2001-09 के बीच अकेले मुक्तसर जिले में 1074 व्यक्तियों की कैंसर से मृत्यु हुई है और 668 गंभीर अवस्था में हैं। मालवा क्षेत्र में कैंसर अस्पताल नहीं होने से लोग बीकानेर इलाज के लिए जाते हैं। फोरेंसिक लैब पटियाला ने 12 जिलों के खून के सैम्पल लिए जिनमें 6 से 13 प्रतिशत पेस्टिसाइड खून में मिला है। डॉ. अम्बेडकर नेशनल इंस्टीट्यूट जालंधर ने 34 गाँवों के पानी के हैंडपम्पों में यूरेनियम पाया है जिनमें मांसा जिले की स्थिति गंभीर है। भटिंडा जिले में यूरेनियम की सान्द्रता 30 माइक्रोग्राम प्रति लीटर पाई गई जबकि यह 9 से अधिक नहीं होना चाहिए। पंजाब सरकार इन गंभीर क्षेत्रों में 200 आर.ओ. रिवर्स सिस्टम लगा रही है परन्तु वैज्ञानिकों के अनुसार आर.ओ. सिस्ट्म से हेवीमेटल्स जैसे आर्सेनिक, क्रोमियम, लोहा आदि को दूर नहीं किया जा सकता है। ग्रीनपीस ने भटिंडा, फरीदकोट, मांसा, संगरूर, मुक्तसर और मोगा जिलों में स्थिति गम्भीर पाई गई है। भैंस का दूध भी प्रदूषित हो गया है। 2500 लोगों की मृत्यु के बाद बिसरा की जांच की गई जिसमें डी.डी.टी. ईंधन और इंडोसल्फान रसायन मिले हैं। 10 वर्ष से कम और 10-35 वर्ष के बच्चों में कैंसर पाया गया। वहां के बच्चे बचपन में ही बुढ़े हो रहे हैं। जोड़ों का दर्द, गठिया, और कंकाल फ्लोरोसिस के मरीज बढ़े हैं। त्वचा व फेफड़ों का कैंसर भी बढ़ा है। कुल मिलाकर पंजाब की खेती आज अभिशाप बनती जा रही है।

पंजाब के अधिकतर गांव आज मरने की कगार पर हैं। सेहत, शिक्षा, आवाजाही और साफ-सफाई की सुविधाएं भी मात्र शहर और कस्बा केंद्रित कर दी गई हैं। लालाच पर केंद्रित किसानी के कारण बेहद समृद्ध लोकजीवन भी छिन्न-भिन्न हो चला है। धान कभी पंजाब की फसल नहीं रही। पर पैसे के लालाच और दूसरे राज्यों के लिए अधिक से अधिक चावल बेचने के मोह ने किसानों के फसल चक्र को उल्टा चला दिया। धान का उत्पादन

- शेष पृष्ठ 7 पर

समलैंगिकताः एक प्रसव-हीन 'सुप्रीम' बुद्धि विलास

'वैदिक एवं अन्य धार्मिक वैवाहिक मान्यताए'

आज हमारे देश में समलैंगिक सम्बन्धों को सामाजिक मान्यता देते देते, उन्हें विवाहित दंपति मानकर अधिकार सम्पन्न भी करने की एक दुर्भाग्यपूर्ण व्यग्रता दिखाई दे रही है। इस असंवैधानिक विषय पर सर्वोच्च न्यायालय तक की अप्रत्याशित रुचि, और इसको लगभग मान्यता देते हुए, मुख्य न्यायाधीश महोदय की व्यक्तिगत टिप्पणियां भी अत्यंत निराशाजनक व अशोभनीय प्रतीत हो रही हैं।

आइये, हम सभी, भारतीय वैदिक संस्कृति में विवाह संस्कार से जुड़ी शास्त्र सम्मत मान्यताओं एवम् व्यवस्थाओं का अवलोकन करें। हमारी संस्कृति में, परम्परा से, वेद और स्मृतिशास्त्र समर्थित संस्कार मनुष्य को सभ्य, शिष्ट, सुसंस्कृत एवं भयमुक्त बनाते हैं। हिन्दू संस्कृति में गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि पर्यंत सोलह संस्कारों का विधान है। इन सोलह संस्कारों में से पंद्रहवां संस्कार है 'विवाह संस्कार।' विवाह संस्कार मानव जीवन का बहुत ही महत्त्वपूर्ण संस्कार है। यह सिर्फ दो शरीरों का ही नहीं, अपितु दो आत्माओं का पवित्र मिलन है। विवाह के साथ ही गृहस्थ जीवन प्रारंभ होता है।

यह गृहस्थाश्रम, चारों आश्रमों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि-

1- बाकी तीन आश्रम- 'ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा संन्यासाश्रम' इसी गृहस्थाश्रम पर निर्भर हैं। ये तीनों आश्रमवासी गृहस्थियों से ही भिक्षा मांगकर एवम् विविध प्रकार की सहायता प्राप्त कर जीवन यापन करते हैं।

2- मनुष्य अपने तीन ऋणों- पितृ ऋण, ऋषि ऋण और देव ऋण से इसी गृहस्थाश्रम में रहता हुआ उऋण, हो पाता है।

> **"वेदों के अनुसार विवाह एक आदर्श और सम्मानित सामाजिक प्रक्रिया है, एक मधुर बंधन है। गृहस्थ जैसे पवित्र आश्रम का आधार है जिसका लक्ष्य मात्र शारीरिक भोग विलास नहीं है अपितु यम, नियम, संयम से चलने वाला यह एक मजबूत और अटूट रिश्ता है जो उत्तरदायित्वों से भरा होने पर भी अभीष्ट है। स्पष्ट है कि सदियों से, विधर्मियों के सारे कुत्सित प्रयासों के वावजूद भी आज हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान यदि जीवित रह पाई है तो सिर्फ हमारी वैदिक संस्कृति में इसी वैवाहिक संबंध की पवित्रता, शालीनता और निरन्तरता के कारण ही रह पाई है।"**

3- इतना ही नहीं, गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि पर्यंत सभी संस्कार विवाह संस्कार के कारण ही संभव हो पाते हैं। कारण स्पष्ट है, विवाह नहीं तो संतानोत्पत्ति नहीं। जब संतान ही उत्पन्न नहीं हो तो कोई भी आश्रम व्यवस्था चलने वाली नहीं है।

4- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में से तीन पुरुषार्थो-धर्म, अर्थ, और काम की प्राप्ति का साधन भी विवाह ही है।

5- हमारे शास्त्रों में पत्नी के बिना मनुष्य को यज्ञ तक करने का अधिकारी नहीं माना गया।

'अयज्ञो वा एषः योऽपत्नीकः'

(तैत्तिरीय ब्राह्मण 2.2.2.6)

6- मनुष्य के मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए भी विवाह अत्यावश्यक है। विवाह से मनुष्य के दृष्टिकोण में परिवर्तन होता है। उसमें सहनशीलता, त्याग, क्षमा, दान, उदारता जैसे गुणों का विकास भी हो पाता है।

इन्हीं सभी कारणों से वेदों, गृह्यसूत्रों, स्मृति-ग्रंथों, आदि में विवाह संस्कार का विस्तृत वर्णन किया गया है।

'वि' उपसर्ग पूर्वक वह-प्रापणे धातु से 'घन्' प्रत्यय करने पर 'विवाह' शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है- 'विवाह:विशिष्टवहनम्' । विवाह को विशिष्ट वहन माना गया है क्योंकि विवाह के पश्चात् वर और वधू, दोनों की जिम्मेदारियां, उनके कर्तव्य बहुत ही बढ़ जाते हैं। महर्षि दयानंद ने अपनी संस्कारविधि में 'विवाह' की परिभाषा इस प्रकार की है,

'सन्तानोत्पत्तये'
'वर्णाश्रमानुकूलमुत्तमकार्यसिद्धये च स्त्रीपुरुषयोः सम्बन्धो विवाहः',

अर्थात्, संतान की उत्पत्ति के लिए, वर्णाश्रम के अनुकूल, उचित कार्य करने के लिए स्त्री और पुरुष का संबंध 'विवाह' कहा जाता है।

तैतरीयोपनिषद् (1.11.1) में भी **'प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः'** अर्थात् 'संतानोत्पत्ति रूपी वंश-परंपरा को विच्छिन्न मत करो'- यह कह कर विवाह की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इसे शारीरिक अथवा सामाजिक बंधन नहीं माना गया है, बल्कि इसे जीवन की निरन्तरता का रूप दिया गया है। वर, वधू का पाणिग्रहण करते समय वधू से कहता है कि, सौभाग्य और आजीवन साथ रहने के लिए भग, अर्यमा, सविता, आदि देवताओं की कृपा से गृहस्थ धर्म का पालन करने के लिए मैंने तुम्हारा हाथ थामा है।

'गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।'
'भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः।'

(ऋग्वेद 10.85.36)

इसी कारण विवाह संस्कार को पाणिग्रहण संस्कार भी कहा जाता है। वधू से आशा की जाती है कि पतिगृह जाकर वह संतान को जन्म देगी, पति-पत्नी दोनों के प्रेम में वृद्धि होगी, गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों को अच्छे से निभाएगी, पति के साथ एक प्राण, एक मन वाली होकर रहेगी तथा बच्चों को अच्छे संस्कार देगी। उन्हें भविष्य के उत्तम नागरिक बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

'इह प्रियं प्रजया समृध्यतामस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि।'
'एना पत्या तन्वं सं सृजस्वाऽधा जिव्री विदथमा विदाथः।'

(ऋग्वेद 10.85.27)

यहां ध्यान देने योग्य बात है कि सात फेरे और सप्तपदी, दोनों अलग अलग रस्में हैं। सात फेरों में वर और वधू अग्नि के चारों ओर सात फेरे लेते हैं। और हर फेरे के साथ एक एक

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

नर्वस सिस्टम सम्बन्धी रोग एवं एक्यूप्रेसर द्वारा उपचार

क्रमशः गतांक से आगे

निम्नांग का लकवा (paraplegia-paralysis of both legs and lower parts of the body): इसमें पेड़ूगुहा (pelvic) से नीचे का भाग अर्थात जांघों से लेकर पैरों की अंगुलियों तक शरीर के सारे निचले भाग की शक्ति नष्ट हो जाती है।

स्वरयन्त्र का लकवा (vocal cord's paralysis): इसमें व्यक्ति का बोलना पूर्णरूप से या आंशिक रूप से बन्द हो जाता है।

आवाज का लकवा (bulbar paralysis or aphasia): इस रोग में जीभ जकड़ सी जाती है जिससे बोलने में तकलीफ होती है तथा व्यक्ति तुतलाना भी शुरू कर देता है।

मुंह का लकवा (facial paralysis-bell's patsy): इसमें मुंह का एक तरफ का भाग स्थूल होकर थोड़ा घूम सा जाता है। मुंह का एक कोना नीचे हो जाता है, कई रोगियों की उस तरफ की आंख में भी टेड़ापन सा आ जाता है तथा आंख प्रायः खुली ही रहती है। आंख से पानी भी बहने लगता है। गाल पूरा फूल नहीं पाता। हंसने पर मुंह टेढ़ा लगता है।

अंगुलियों का लकवा (writer's paralysis): इसमें हाथ की अंगुलियों पर प्रभाव पड़ता है। कई लोगों का अंगूठा पूरी तरह हिल नहीं पाता और वे ठीक प्रकार लिख नहीं पाते।

पारकिनसन्स डिसीज (Parkinson's Disease)

यह स्नायु संस्थान सम्बन्धी रोग है। इसके बारे में The Macmillan Guide to Family Health में कहा गया है- Parkinson's disease is due to gradual deterioration in nerve centres within the brain that control movement, particularly semi-automatic movements such as swinging the arms while walking. यह कम्पन रोग है जो अधिक उम्र होने पर होता है। इस रोग में हाथों में या सिर में स्वयं ही कम्पन होती है। रोगियों के हाथ और सिर दोनों कांपने लगते हैं। कोई काम शुरू करने पर कम्पन प्रायः बंद हो जाती है। इस रोग में कई रोगियों को काफी डिप्रेशन depression हो जाता है।

पोलियो (polio-poliomyelitis)

यह रोग किसी भी आयु के व्यक्ति विशेषकर पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों और उनमें भी अधिकतर छः मास से एक साल की आयु के बच्चों को एकाएक वायरस के आक्रमण (Polio-Poliomyelitis is caused by a virus infection which specially attcks the anterior, motorhorn cells in the spinal cord. It may also, however. affect the brain, especially the midbrain, producing what is called encephalitils) के कारण होता है। इस रोग में पहले सिरदर्द, गले का दर्द और बुखार होता है। गर्दन और पीठ की मांसपेशियां दर्द करती हैं, उसके बाद मांसपेशियां सूखने लगती हैं जिस कारण चलना फिरना कठिन हो जाता है। विशेषकर एक टांग बहुत दुर्बल व पतली हो जाती है और लम्बाई में दूसरी टांग से थोड़ी छोटी भी हो जाती है। कई रोगियों के पैर में पूरी शक्ति नहीं रहती जिस कारण कई बार पैर से चप्पल अपने आप बाहर निकल जाती है। कई रोगियों का एक बाजू भी दुर्बल हो जाता है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, हड्डियों और जोड़ो में भी विकृति आने लगती है। हमारे देश में जितने अपंग बालक हैं उनमें से दो तिहाई पोलियो के कारण अपंग हैं। यद्यपि विकसित देशों में पोलियो की बीमारी का पूरी तरह उन्मूलन कर दिया गया है, विकासशील देशों में अब भी यह बीमारी है।

लकवा होने पर डॉक्टरी सहायता ली जाए। समय पर उचित डॉक्टरी सहायता मिल जाने से यह रोग प्रारम्भिक अवस्था में ही ठीक हो जाता है। अगर तुरंत डॉक्टरी सहायता न मिल सके तो ऐसी स्थिति में इन रोगों के लिए एक्युप्रेशर का इलाज काफी कारगर सिद्ध होता है।

साभार- सहज उपचार, पुस्तक से

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

मध्य दिल्ली में वेद प्रचार यात्रा लगातार गतिशील, हर आयु वर्ग सहित बच्चों में उत्साह की लहर

सुदर्शन पार्क, कलस्टर कालोनी एवं विभिन्न स्थानों पर आर्यजनों द्वारा प्रचारकों का स्वागत

आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परम्पराओं के प्रचार-प्रसार, युवा पीढ़ी को नशामुक्त करने, परिवार, समाज और देश की रक्षा हेतु रिश्तों को बचाने, भेद-भाव मिटाने के, पर्यावरण को बचाने, महिला सशक्तिकरण एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान उत्साह पूर्वक बढ़ रहा है आगे

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 16 से 23 जून 2023

स्थानः- आर्ष महाविद्याल कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली- 110040

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की इकाई सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 16 से 24 जून 2023 तक कन्या गुरुकुल नरेला में लगाया जायेगा जिसमें आर्य वीरांगनाओं को शाखानायक श्रेणी की शारीरिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः 600/- रुपये।

आवश्यक सामानः गणवेश सफेद कुर्ता, सलवार, सफेद मोजे व जूते, केसरिया चुन्नी, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आर्य वीरांगना आर्य वीरांगना दल अथवा आर्य समाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, अपना पासपोर्ट फोटो, आधार कार्ड की फोटोकापी भी लायें। जिन्होंने आर्य वीरांगना दल की प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की है, उन्हीं को प्रवेश मिलेगा। अपने साथ कीमती सामान न लायें।

मार्गः पुरानी दिल्ली से 131, 136 नम्बर बस पकड़कर कन्या गुरुकुल पहुंचें। दिल्ली से रेल द्वारा नरेला रेलवे स्टेशन से टैम्पो द्वारा कन्या गुरुकुल पहुंचें।

सम्पर्क करें

सोमवीर शास्त्री महामंत्री 9999299300	आचार्य सविता आचार्या 9999655363	चौधरी देवीसिंह मान प्रधान

प्राचीन, ग्रामीण, सामाजिक, आर्थिक पर्यावरणीय एवं भौतिक परिवर्तनों आदि विषयों पर आधारित पुस्तक का विमोचन संपन्न

आर्य समाज साकेत के पूर्व प्रधान एवं संरक्षक डॉ. पूर्ण सिंह डबास जी द्वारा रचित पुस्तक 'माजरा डबास और इसके परिधीय गांव (व्युत्पत्ति और भौगोलिक विस्तार)' का विमोचन शनिवार 22 अप्रैल 2023 को सेमिनार हॉल महाराजा सूरजमल संस्थान जनकपुरी में संपन्न हुआ। पुस्तक का विमोचन करते हुए दांए से डॉ. पूर्ण सिंह डबास, डॉ. हरिसिंह पाल, प्रोफेसर अजय तिवारी, डॉ. रामचन्द्र ठाकरान तथा श्री कप्तान सिंह और सभागार में उपस्थित महानुभाव।

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

वेद और योग के प्रति समर्पित थे- पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जयंती 26 अप्रैल पर विशेष

किसी एक धुन के सिवा मनुष्य कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। धुन भी इतनी कि दुनिया उसे पागल कहे। पं. गुरुदत्त के अन्दर पागलपन तक पहुँची हुई धुन विद्यमान थी। उन्हें योग और वेद की धुन थी। जब गुरुदत्तजी स्कूल की आठवीं जमात में पढ़ते थे, तभी से उन्हें शौक था कि जिसके बारे में योगी होने की चर्चा सुनी, उसके पास जा पहुँचे। प्राणायाम का अभ्यास आपने बचपन से ही आरम्भ कर दिया था। इसी उम्र में एक बार बालक को एक नासारन्ध्र को बन्द करके साँस उतारते-चढ़ाते देखकर माता बहुत नाराज हुई थी। उसे स्वभावसिद्ध मातृस्नेह ने बतला दिया कि अगर लड़का इसी रास्ते पर चलता गया तो फकीर बनकर रहेगा।

अजमेर में योगी महर्षि दयानन्द की मृत्यु को देखकर योग सीखने की इच्छा और भी अधिक भड़क उठी। लाहौर पहुँचकर पण्डितजी ने योगदर्शन का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया। आप अपने जीवन की घटनाओं को लेखबद्ध करने और निरन्तर उन्नति करने के लिए डायरी लिखा करते थे। उस डायरी के बहुत-से भाग कई सज्जनों के पास विद्यमान थे। उनके पृष्ठों से पता चलता है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, पण्डितजी की योगसाधना की इच्छा प्रबल होती गई। आप प्रतिदिन थोड़ा-बहुत प्राणायाम करने लगे। आपकी योग की धुन इतनी प्रबल हो गई कि कुछ समय तक गवर्नमैण्ट कॉलेज में साइन्स के सीनियर प्रोफेसर रहकर आपने वह नौकरी छोड़ दी। आपके मित्रों ने बहुत आग्रह किया कि आप नौकरी न छोड़िए। केवल दो घण्टे पढ़ाना पड़ता है, उससे कोई हानि नहीं। आपने उत्तर दिया कि प्रात:काल के समय में योगाभ्यास करना चाहता हूँ, उस समय को मैं कॉलेज के अर्पण नहीं कर सकता। यह

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी अपने जीवन की घटनाओं को लेखबद्ध करने और निरन्तर उन्नति करने के लिए डायरी लिखा करते थे। उस डायरी के बहुत से भाग कई सज्जनों के पास विद्यमान थे। उनके पृष्ठों से पता चलता है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, पण्डितजी की योगसाधना की इच्छा प्रबल होती गई। आप प्रतिदिन थोड़ा-बहुत प्राणायाम करने लगे। आपकी योग की धुन इतनी प्रबल हो गई कि कुछ समय तक गवर्नमैण्ट कॉलेज में साइन्स के सीनियर प्रोफेसर रहकर आपने वह नौकरी छोड़ दी। आपके मित्रों ने बहुत आग्रह किया कि आप नौकरी न छोड़िए। केवल दो घण्टे पढ़ाना पड़ता है, उससे कोई हानि नहीं। आपने उत्तर दिया कि प्रात:काल के समय में योगाभ्यास करना चाहता हूँ, उस समय को मैं कॉलेज को अर्पण नहीं कर सकता।

-स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

पहला ही अवसर था कि पंजाब का एक हिन्दुस्तानी ग्रेजुएट गवर्नमेंट कॉलेज में साइन्स का प्रोफेसर हुआ था। कॉलेज के अधिकारियों और हितैषियों ने बहुत समझाया, परन्तु योग के दीवाने ने एक न सुनी, एक न मानी।

पं. गुरुदत्तजी को दूसरी धुन थी वेदों का अर्थ समझने की। वेदों पर आपको असीम श्रद्धा थी। वेदभाष्य का आप निरन्तर अनुशीलन करते थे। जब अर्थ समझने में कठिनता प्रतीत होने लगी तब अष्टाध्यायी और निरुक्त का अध्ययन आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे अष्टाध्यायी का स्वाध्याय पण्डितजी के लिए सबसे प्रथम कर्तव्य बन गया, क्योंकि आप उसे वेद तक पहुँचने का द्वार समझते थे। आपका शौक उस नौजवान-समूह में भी प्रतिबिम्बित होने लगा, जो आपके पास रहा करता था। सुनते हैं कि मा. दुर्गादासजी, ला. जीवनदासजी, मा. आत्मारामजी पं. रामभजदत्तजी और लाला मुन्शीरामजी की बगल में उन दिनों अष्टाध्यायी दिखाई देती थी।

अष्टाध्यायी, निरुक्त और वेद का स्वाध्याय निरन्तर चलता रहा। यदि उसमें नागा हो जाती तो पण्डितजी को अत्यन्त दु:ख होता। वह दु:ख डायरी के पृष्ठों में प्रतिबिम्बित है। आपकी प्रखर बुद्धि के सामने कठिन-से-कठिन विषय सरल हो जाते थे, और बड़े-बड़े पण्डितों को आश्चर्य चकित कर देते थे। श्री स्वामी अच्युतानन्दजी अद्वैतवादी संन्यासी थे। पं. गुरुदत्तजी आपके पास उपनिषद् पढ़ने आ जाया करते थे। विद्यार्थी की प्रखर बुद्धि का स्वामीजी पर यह प्रभाव पड़ा कि शीघ्र ही शिष्य के अनुयायी हो गये। स्वामीजी पं. गुरुदत्तजी को पढ़ाते-पढ़ाते स्वयं द्वैतवादी बन गये और आर्यसमाज के समर्थकों में शामिल हो गये। देहरादून के स्वामी महानन्दजी प्रसिद्ध दार्शनिक थे। आपको भी पं. गुरुदत्तजी के अध्यापक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सुयोग्य शिष्य के प्रभाव से आप भी आर्यसमाजी बन गये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महिला स्वरोजगार एवं स्वावलंबन योजना

महिलाओं द्वारा निर्मित सुंदर रंगीन आसन सभा के वैदिक प्रकाशन पर बिक्री के लिए उपलब्ध

नारी के उत्थान और सम्मान के लिए आर्य समाज लगातार प्रयास रत रहा है। इस क्रम में दिल्ली सभा द्वारा महिला स्वरोजगार योजना और स्वावलंबन प्रकल्प इसका एक लघु प्रयास है। जिसमें महिला स्वरोजगार के लिए जो पुराने वस्त्र होते हैं, उनकी दरियां, आसन और अन्य उपयोग में आने वाली वस्तुओं के निर्माण करने का कार्य सेवा बस्तियों की महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। जिससे वे सरलता और सहजता के साथ रोजगार प्राप्त करके अपनी जीविका को चलाने के लिए अग्रसर हो रही हैं। आर्य समाज के उत्सवों, सम्मेलनों आदि में उनका विधि वत स्टाल लगाने का प्रयास भी भविष्य में किया जाना सुनिश्चित है, अभी इन महिलाओं द्वारा बनाए गए सुंदर आसन दिल्ली सभा के वैदिक प्रकाशन के स्टाल पर उपलब्ध हैं, सभी आर्य सज्जनों, आर्य समाजों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि आप इन सुंदर आसनों को खरीद कर आर्य समाज के महिला स्वरोजगार योजना को सफल बनाने में स्वयं सहयोगी बने और दूसरों को प्रेरित करें।

सहयोग, योजना में प्राप्त अनुपयोगी वस्त्रों से बनाये जाते हैं- आसन
आर्य समाज जहांगीर पुरी में चलता है सेवाकेन्द्र

आप भी अपने आर्य समाज मन्दिरों में शुरु कर सकते हैं यह महान प्रकल्प इसके लिए दिल्ली सभा से करें संपर्क

इस योजना में उन महिलाओं को जो किन्हीं भी कारणों से घरेलू परिस्थितियों में पिछड़ गई थी, उन्हें सभा अपने पैरों पर खड़े होने में सहयोग कर रही है। सभा की एक अन्य योजना जो नारी स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण के लिए समर्पित है उसमें उन्हें 10,000 का लोन दिया जाता है, जिससे वे अपना छोटा सा कार्य व्यापार शुरू करते हैं और फिर थोड़ा थोड़ा करके उसे चुकाते भी जाते हैं। इस तरह दिल्ली सभा का प्रयास है कि निर्धन और किन्हीं भी कारणों से पिछड़ी हुई महिलाओं को सहयोग प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए मजबूती दी जाए, वे आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार को चला सकें, अपने बच्चों को शिक्षित कर सकें, उनके बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके, उनके घर परिवार में प्रेम प्रसन्नता और खुशियां आएं। अत: आईए, सभा के इस अनूठे सेवा कार्य में इन महिलाओं द्वारा बनाए गए, आसनों को जल्द से जल्द खरीद कर सहयोगी बने....आसनों की प्राप्ति के लिए संपर्क करें- मो. नं. 9540040339, लिंक bit.ly/VedicPrakashan

Sun to Moon

As stated to far, according to the Vedic cosmogony, in a. solar system, the sun comes first, then appear planets and then satellites of moons, which are the tail enders. Parts of the sun, shooting out from it according to the Divine dispensation of things, settle in space as planets, which revolve right round the sun on fixed orbits. In continuation of the same Divine dispensation, parts of various planets, shooting out from the same, get fixed in space and go right round the planets of their origin. So far as our solar system is concerned, there is also a definite statement to this effeet : 'The nebula (rotating, premordial, radiating energy ball or Virat), through the threefold energies (the nonperishable lustre, electricity and fire), results into three cosmic bodies the sun, the planets and the satellites or moons)'—Yajurved, 9.31 ("Vishnuh-thryaksharenha threen lokaan-udhajayath"). The Vedic passages, some of which have already been quoed, directly or by implication support the proposition stated above. The Rigved, 10.190.3, of course, states specifically : 'The Sustainer, as before, created sun to moon' ("Sooryaachandramasau dhhaathaa yathhaapoorvam-akalpayath').

Some astronomers speculate that the moon is probably the oldest of the planets of our solar system. Some modern space scientists, finding that there is no trace of life or vegitation on the moon, go the length of suggesting that the moon is probably one of the oldest of the heavenly bodies (including planets). But the fact seems to be the opposite. Like any ether satellite of the solar system, the moon's origin is as a dead or inactive heavenly body, having come out of the earth, one of the planets. The earth, like any other planet of this solar system, has heat inside but is cold outside, whose end would synchronise with dissipation of all heat energy from it. The Yajurved, 12.61, states specifically : 'Like mother to a child, the earth, round like an earthen pot, bears in her inside (womb) the sustaining heat ("Maatheva puthram prithhivee pureeshyam-agnigwam swe yonaavabhaarukhaa"). Planets, coming out of the sun, citadel or storehouse of energy, have heat inside according to the depth towards the centre, but the moon, like any other satellite from a planet, coming out of the outer surface of the earth, which is cold or dead of heat, may be said to be a dead sub-planet. It is, like any other satellite, youngest and not oldest.

According to the Vedas, of all the planets of the solar system, the earth is the best, which seems to be the correct proposition in the light of the findings of the recent space' technologists. The relevant Vedic passages may, quite appropriately, be given here :—

1. 'The extensive earth, bearing nutriments, yielding sweet things and well set with the shining metals, is the highest (best) of regions (planets)'—Rigved. 6.70.1; Yajurved, 34. 45 ("Ghrithavathee bhuvanaanaam-abhishhiriyorvee prithhvee madhudhughe supeshhasaa").

2, 'What are these three kinds of planets (extensive habitable regions in this or our, etherial and radiant solar systems), of them certainly the earth is the best' ("lmaa yaasthisrah prithhiveeh thaasaam ha bhoomi-ruththamaa") —Atharvaved, 6.21.1

Like this earth of ours, all the planets of this and other solar systems, which have been styled as vasus or habitable regions in the Vedas and the Brahman literature, the Shatapath Brahman in particular, are directly or by implication stated to have some form of life on them by the Vedas.

The following Vedic verses are relevant in this connection :-

I. 'The eighth (earth) is the abode of beings (creatures) —Yajurved, 26.1 ("Ashtamee bhootha-saadhhanee").

2. '0 the Omnipotent, Thou comest (art counted) before the abodes (planets) of human beings, of beings and of celestial (glorious) beings'—Rigved, 3.34.2; Atharvaved, 20.112 ("Indhra kshitheenaamasi maanusheenhaam vishhaam dhaiveenaamutha poorvayaavaa").

3. 'The abodes of beings (planets) raise (are glorifications of the Omnipotent'—Rigved, 8.16.9 ("lndhram vardhhanthi kshithayah").

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

परलोक-अपरलोक-जन्म-मरण-स्वर्ग

10-परलोक

सद्विद्या प्रभु-प्राप्ति से
परम सुखों का ओक ।
जन्म, पुनर्भव, मोक्ष में,
कहलाता 'परलोक' ।।15।।

11-अपरलोक

उल्टा जो परलोक से
जिसमें दुःख विशेष ।
'अपरलोक' कहते यहां
बुध जन उसे अशेष ।।16।।

12-जन्म

मिल शरीर से जीव
जो होता कर्म-समर्थ ।
उसको कहते 'जन्म' हैं,
पडिण्त शास्त्र-समर्थ ।।17।।

13-मरण

जो संयुक्त श्रीर से
होता जीव-वियोग ।
'मरण' उसी को कह रहा
विद्वज्जन-आयोग ।।18।।

14-स्वर्ग

जो विशेष सुख और
सुख-साधन जो हों प्राप्त ।
उसको कहते 'स्वर्ग' हैं ऋषि,
मुनि, चिन्तक, आप्त ।।16।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

हर आयु वर्ग के लिए सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा का विशेष आयोजन

परीक्षा तिथिः- 25 जून, 2023 रविवार **समयः**- 12:00 से 1:00 तक
पंजीकरण तिथिः- 15 जून, 2023 **पंजीकरण शुल्कः**- 100/-
स्थानः- आर्य समाज मंदिर इंदिरा पार्क पालम कॉलोनी नई दिल्ली
नियमः- परीक्षा में कुल 10 प्रश्न पूछे जाएंगे और सभी प्रश्न सत्यार्थ प्रकाश से होंगे। प्रत्येक सही उत्तर का पुरस्कार राशि 1000/- होगी तथा जिसके सभी 10 उत्तर सही होंगे उसे 11000/- का पुरस्कार दिया जाएगा।

- परीक्षा के बाद सभी के लिए भोजन की व्यवस्था रहेगी।
- निर्णायक मंडल का निर्णय सर्वमान्य होगा

पंजीकरण शुल्क (मोबाइल नंबर 9810197504) विनोद कुमार, पेटीएम अथवा गूगल पे पर भेज सकते हैं। शुल्क भेजने के बाद स्क्रीनशॉट व्हाट्सएप अवश्य करें।

- सभी परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा।
- परीक्षा से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए श्री सुखबीर सिंह आर्य (मोबाइल नंबर 9350502175) पर संपर्क करें।

निवेदक- महाशय प्रीतम सिंह आर्य, प्रधान, आर्य समाज इंदिरा पार्क पालम कॉलोनी नई दिल्ली-45, फोन नंबर 8447434774

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज सी-3 जनकपुरी का वार्षिक चुनाव संपन्न

प्रधान : श्री जयपाल गर्ग जी
मन्त्री : श्री बी. एस. सैनी जी
कोषाध्यक्ष : श्री गुरुदत्त प्रेमी जी

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में
मात्र 300/-रु. सैंकड़ा
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

प्रेरक प्रसंग

आर्य समाजी हूं

जब पण्डित श्री गणपतिजी शर्मा ने काश्मीर के शास्त्रार्थ में पादरी जॉनसन को परास्त किया तो सर्वत्र उनका जयजयकार होने लगा। उस समय शास्त्रार्थ के सभापति स्वयं महाराजा थे। महाराजा ने प्रेम से पण्डितजी से पूछा- कहो गणपति शर्मा! तुम्हारे-जैसा विद्वान् आर्यसमाजी कैसे हो गया? क्या सचमुच तुम आर्यसमाजी हो? ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सम्भव है महाराजा ने सोचा हो कि मेरे प्रश्न के उत्तर में पण्डितजी कह देंगे कि मैं आर्यसमाजी नहीं हूँ।

पूज्य पण्डितजी पेट-पन्थी पोप नहीं थे। नम्रता से, परन्तु सगर्व बोले, 'हाँ, महाराज! मैं हूँ तो आर्यसमाजी।'

उस सच्चे ब्राह्मण के यशस्वी, तपस्वी जीवन से प्रभावित होकर ही तो 'शंकर' जी ने लिखा था-

पैसों के पुजापे पाने
वाले को न पूजते हैं,
पूज्य न हमारे लंठ
लालची लुटेरे हैं।
पोंगा पण्डितों की पण्डिताई
के न चाकर हैं,
ज्ञानी गणपति की-सी
चातुरी के चेरे हैं।।

श्रीयुत पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी

तेरी औषधि रह गई।

प्रायः यह कहानी सुनाया करते थे कि एक बार उनके साथ यात्रा करते हुए एक यात्री रेल में मूंगफली खाकर छिलके डिब्बे में ही फैंकता रहा। जब वह रेल से उतरा तो कुली को बुलाकर कहा, 'मेरा सामान उतारो।' सामान उतरवाकर चलने लगा तो देहलवीजी ने कहा, 'अरे बाबूजी! आपकी एक वस्तु तो रह गई।' उसने मुड़कर पूछा, 'क्या?' पण्डितजी ने मूंगफली के छिलकों की ओर संकेत करके कहा, 'यह।' बाबूजी लज्जित होकर खिसकने लगे तो देहलवीजी ने कहा, 'मैंने सोचा सम्भवतः छिलकों से आपने कोई औषधि बनानी है।'

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

विकास के चक्कर में फंसकर विनाश की राह पर बढ़ती पंजाब की खेती

इतना बढ़ा कि सड़ने तक लगा। अधिक उत्पादन के कारण चोरी के नए-नए तरीके ईजाद हुए। सरकारी गोदामों में धान की बोरियां सड़ाने के लिए विशेष तौर पर सब्मर्सिबल पंप लगाए गए। इससे शैलर मालिक और अधिकारियों की तिजोरियां भरती गईं, किसान की जेब कटती गई। दूसरे राज्यों से मजदूरों से भरी गाड़ियां आने लगीं। मेहनती माना जाने वाला किसान अब मेहनत से भी दूर होने लगा। शराब का नशा बेशक पहले से था ही, उसमें अब चिट्टे समेत और भी छोटे-बड़े नशे जुड़ गए हैं। ऐसे में, एड्स, दीगर बीमारियां, लूटमार, छीना-झपटी की घटनाएं बढ़ने लगी हैं। लोग नशे के लिए भी कर्ज लेने लगे हैं।

भंयकर उत्पादन और पैसे की पहली खेप से सबसडी, सस्ते कर्ज आदि के कारण सब्मर्सिबलों और ट्रैक्टरों की कम्पनियां सरकारी शरण लेकर हर शहर में बिछ गईं। देखते ही देखते 12,644 गांव में 15.5 लाख सब्मर्सिबल लगाए दिए गए। कुछ ही सालों में जल का स्तर 20 से 250 फीट नीचे पहुंच गया। अब इन सब्मर्सिबल पम्पों के लिए 15 से 20 हॉर्स-पावर की मोटर काम करती है। इससे भी बड़ा नुकसान चरागाहों का समाप्त होना है। बांझ पशुओं से दवाओं के सहारे लिए जाने वाले दूध के कारण महिलाओं में भी बांझपन के मामले सामने आने लगे हैं। पहले शहरीकरण और अब वैश्वीकरण ने पंजाब को काल का ग्रास बनने के कगार पर ला खड़ा किया है। पंजाब दुनिया का पहला राज्य होगा, जहां से 'कैंसर एक्सप्रेस' चलती है। जिस राजस्थान के साथ पंजाब पानी का एक घड़ा बांटने को तैयार नहीं, उसी राजस्थान का बीकानेर पंजाब के कैंसर मरीजों को मुफ्त इलाज देता है। बड़े सरकारी अधिकारी और कृषि विशेषज्ञ अब बचे-खुचे पंजाब को भी उजाड़ने की तैयारियों में जुटे हैं। कृषि उत्पादों को विश्व बाजार में ले जाने का एक नया सपना और बोया जा रहा है। पंजाब की बची-खुची उपजाऊ जमीन पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों और देशी धन्ना सेठों का हल्ला जारी है। पंजाब की खेती-किसानी आज ऐसी दौड़ में है, जिसमें वह अपनी अगली पीढ़ी लगभग गंवा चुकी है। वहां अनेक गांव ऐसे हैं, जहां मात्र बुजुर्ग बचे हैं। बच्चे सब विदेश जा चुके हैं।

पंजाब की आबो हवा को बचाना खुद पंजाब के अपने हाथों में है। वहां के किसानों को सोचना-समझना चाहिए कि पहला सुख निरोगी काया है। अगर हमारा शरीर ही स्वस्थ न रहा तो फिर धन-ऐश्वर्य का क्या फायदा, अगर घर-परिवारों में सुख-शांति नहीं रहेगी तो झूठी पद-प्रतिष्ठा का क्या ग़ायदा, अपने शरीर और आत्मा की उन्नति के लिए आवश्यक है कि हम दिखावट बनावट और सजावट को छोड़कर प्रकृति का संरक्षण करें, अपनी प्राचीन परंपराओं का आदर करें, अपना खान-पान आहार शुद्ध रखें, अपनी खेती-किसानी को प्राकृतिक करें, अगर खेती बचेगी तो पंजाब बचेगा। -संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

समलैंगिकताः एक प्रसव-हीन 'सुप्रीम' बुद्धि विलास

वचन लेते हैं जबकि सप्तपदी सात फेरों के बाद होती है जिसमें वर वधू सात कदम साथ चलते हैं और परिवार को आश्वस्त करते हुए कहते हैं कि अब हम पति-पत्नी के साथ साथ मित्र भी बन गए हैं, और हम आजीवन साथ रहेंगे।

विवाह संस्कार में होने वाली फेरों और वचनों की परम्परा में यह पांचवां फेरा और वचन, अत्यंत प्रासंगिक है:

'इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा
मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा।'
'बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम
इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु।'
(अथर्ववेद 14.1.54)

वर कहता है- इंद्र, अग्नि, द्यौ, पृथिवी, मातरिश्वा, मित्र, वरुण, भग, अश्विनी कुमार, बृहस्पति, मरुद्, वेद और सोम मेरी इस पत्नी के माध्यम से हमें हमारी संतान प्रदान करने की कृपा करें। वधू भी यही वचन देती है कि वह भी अपने पति के प्रति प्रेमभाव रखेगी और संतानों को जन्म देकर, परिवार और समाज की भावी पीढ़ी के निर्माण में सहायक होगी। इन फेरों के बाद वर वधू सात कदम एक साथ चलते हैं और अन्न, बल, धन, सुख, संतान, और ऋतु के अनुसार व्यवहार करने की तथा परस्पर मित्रता की प्रार्थना करते हैं-

'ओं ईषे एकपदी भव, ओं ऊर्जे द्विपदी भव, ओं रायस्पोषाय त्रिपदी भव, ऊं मायोभव्याय चतुष्पदी भव, ओं प्रजाभ्यः पंचपदी भव, ओं ऋतुभ्यः षट्पदी भव, ओं सखे सप्तपदी भव।' (आ. गृ. सू. 1.7.19)

यह सप्तपदी कहलाती है और इसके उपरांत ईश्वर, समाज और परिवार को साक्षी मानकर, उस दिन से दो अनजान युवक-युवती के बीच, पति-पत्नी के रूप में, मानों अटूट मित्रता हो जाती है **'मैत्री सप्तपदीनमुच्यते।'**

इस प्रकार वेदों के अनुसार विवाह एक आदर्श और सम्मानित सामाजिक प्रक्रिया है, एक मधुर बंधन है। गृहस्थ जैसे पवित्र आश्रम का आधार है, जिसका लक्ष्य मात्र शारीरिक भोग विलास नहीं है अपितु यम, नियम, संयम से चलाने वाला यह एक मजबूत और अटूट रिश्ता है जो उत्तरदायित्वों से भरा होने पर भी अभीष्ट है। स्पष्ट है कि सदियों से, विधर्मियों के सारे कुत्सित प्रयासों के वावजूद भी आज हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान यदि जीवित रह पाई है तो सिर्फ हमारी वैदिक संस्कृति में इसी वैवाहिक संबंध की पवित्रता, शालीनता और निरन्तरता के कारण ही रह पाई है। यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि संसार के अन्य प्रमुख धर्मों जैसे ईसाई, मुस्लिम, यहूदी और अन्य सभी मतावलंबियों में भी इन प्रसव-हीन, अनुत्पादक (non productive) संबंधों की कोई मान्यता नहीं है। सभी धर्म और मत, पवित्र विवाह संबंधों के द्वारा मनुष्य जाति की निरन्तरता सुनिश्चित करने की प्रक्रिया को ही स्वीकार करते हैं। प्रकृति भी पशु पक्षियों में नर-मादा के माध्यम से उन योनियों की निरंतरता को सुनिश्चित करती है। इसीलिए प्रकृति और संस्कृति, दोनों की सभ्य, शिष्ट और शालीन मूल अवधारणाओं को अनावश्यक रूप से तोड़ने पर आमादा कुछ मुट्ठी भर बुद्धि-विलासियों के धूर्त प्रयासों से विचलित नहीं होते हुए, हमें और भी सजग होने, सक्रिय चेतना जगाने और पूरी शक्ति से इस निंदनीय प्रयास का प्रतिकार करने की आवश्यकता है।

आज यही हम सभी का दायित्व है और यही आज का राष्ट्रधर्म है।

-विपिन मित्र गुप्ता

अधिकांश रूप से यह अनुभव किया जाता है कि स्थान विशेष पर या समय विशेष पर वैदिक सूक्तियों और प्रेरक सुभाषितों की आवश्यकता होती है। जैसे स्कूल में, गौशाला में, आश्रमों में, खेल के स्थानों पर, पर्व, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन, प्रभात फेरी, शोभायात्रा आदि में प्रेरणाप्रद प्रमाणिक वाक्य लिखने के लिए हम समय-समय पर विचार करते हैं। किन्तु उस समय पर हमें वह उपयोगी मैटर मिल नहीं पाता। अतः आर्य संदेश के सुधी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त वचनों के प्रचार-प्रसार हेतु हमने एक नियमित कालम प्रारम्भ किया है। जिसमें हर बार कुछ सूक्तियां निरंतर प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। -संपादक

वैदिक सूक्तियां

23- अनुशासन सम्बन्धी
स्वस्ति पन्था मनु चरेम
-ऋ०-05-51-15
(हे मनुष्यों! कल्याण मार्ग पर चलो।)

24- व्यवहार सम्बन्धी
विश्वेन सहसा सह
-ऋ०-01-50-13
(सत्पुरुषो के साथ मित्रता करो।)

25- आचरण सम्बन्धी
जज्ञानः पथ्या अनुस्वाः
-अथर्व०-18-01-50
(हे मनुष्यों! वेद मार्ग का ही अनुसरण करो।)

26- आश्रम सम्बन्धी
ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्य गृही भवेत् गृही भूत्वा वनी भवेत् वनी भूत्वा प्रव्रजेत
-शत० का०-14
(मनुष्यों को चाहिए कि ब्रह्मचर्य को समाप्त करके गृहस्थी हो गृहस्थी होकर वानप्रस्थी हो वानप्रस्थी होकर सन्यासी हो।)

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

प्रधानमंत्री के विशेष गुण- राजा उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात रहित न्यायधर्म का सेवी, प्रजाओं में पितृवत् वर्ते और उनको पुत्रवत मान के उनकी उन्नति और सुख को बढ़ाने में सदा यत्न करे।

-स्वमन्तव्यामंतव्य

आपसी फूट का दुष्परिणाम- आर्यों की आपस की फूट और ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के कारण दूसरे वर्ण के लोगों को वेद नहीं पढ़ाए, परिणाम स्वरूप हमारे धर्म के इतने खण्ड हो गए हैं कि अब यह जानना कटिन हो गया है उनमें से कौन-सा ठीक है।

-(महर्षि दयानन्द जीवन चरित पृष्ठ 298)

आपसी फूट- चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नहीं होता, जब तक कि आपस में फूट न हो।

-(पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी) पृष्ठ 83)

अस्पृश्यता और भेदभाव से देश की हानि- इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते-लगाते विरोध करते-करते सब स्वातंत्र्य, आनन्द, धन-राज्य, विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पकाकर खावें। परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त देश में चौका लगाकर सर्वथा नष्ट कर दिया है।

-सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ- 250

सोमवार 01 मई, 2023 से रविवार 07 मई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 03-04-05 मई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 03 मई, 2023

वैदिक विद्वान डॉ. तुलसी राम जी को 100 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई एवं अनन्त शुभकामनाएं

आर्य समाज की महान विभूति, चारों वेदों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करने वाले, वैदिक विद्वान डॉ. तुलसी राम जी के शतायु होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी एवं महामंत्री श्री विश्रुत आर्य जी तथा अन्य महानुभाव उनको बधाई देकर आशीर्वाद लेते हुए।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से डॉ. तुलसी राम जी को उनके जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं अनन्त शुभकामनाएं। -विनय आर्य

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता पॉकेट संस्करण

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

Available on vedicprakashan.com and amazon bit.ly/vedicprakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह